जीवन में लोग प्यार करने के लिए होते है और चीजे इस्तेमाल करने के लिए, पर हम लोगों का इस्तमाल करते है और चीजो से प्यार है।-अज्ञात।

विचार-प्रवाह

देहरादून, बृहस्पतिवार, 16 दिसंबर 2021

पेज थ्री
www.page3news.in

तमाम सेक्टर्स में रिकवरी की रफ्तार

सॉवरेन आउटलुक में बदलाव उन प्रयासों और उनसे मिल रहे पॉजिटिव नतीजों को देखते हुए किया गया है, जिनसे गुजरती भारतीय अर्थव्यवस्था ने तमाम चुनौतियों को पीछे छोड़कर फिर से उठ खड़े होने का जज्बा दिखाया है।

आरती सिंह।।

चौतरफा चुनौतियों से जूझकर उबरती भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मंगलवार को यह राहत देने वाली खबर आई कि अंतरराष्ट्रीय रेटिंग एजेंसी मूडीज ने इसका सॉवरेन आउटलुक नेगेटिव से स्टेबल कर दिया है। एजेंसी ने हालांकि सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग में कोई बदलाव न करते हुए पहले वाला बीएए दर्जा ही बरकरार रखा है, जो सबसे निचला इनवेस्टमेंट ग्रेड है। सॉवरेन आउटलुक में बदलाव उन प्रयासों और उनसे मिल रहे पॉजिटिव नतीजों को देखते हुए किया गया है, जिनसे गुजरती भारतीय अर्थव्यवस्था ने तमाम चुनौतियों को पीछे छोड़कर फिर से उठ खड़े होने का जज्बा दिखाया है।

रेटिंग एजेंसी के आकलन में वित्तीय क्षेत्र की बेहतर होती स्थिति को तो रेखांकित किया ही गया है, यह भी कहा गया है कि इकॉनमी के तमाम सेक्टर्स में रिकवरी की रफ्तार उससे तेज रही, जितनी अपेक्षा की जा रही थी। इसी वजह से यह उम्मीद भी जताई गई है कि वास्तविक जीडीपी इसी साल महामारी के पहले के स्तर को पार कर जाएगी। गौर करने की बात है कि इन पॉजिटिव बदलावों के पीछे उन कुछेक ठोस कदमों की बड़ी भूमिका रही, जो वित्तीय तंत्र की कमियों को दूर करने के मकसद से इस बीच उठाए गए। उदाहरण के लिए बैंकों पर बढ़ता एनपीए (नॉन परफॉर्मिंग एसेट्स) का बोझ पिछले कई वर्षों से एक बड़ी समस्या के रूप में चिह्नित किया जाता रहा है।

अब अगर इस मोर्चे पर भी हालात को बेहतर होता बताया जा रहा है तो उसके पीछे एक वजह यह भी है कि नए कानूनों की मदद से वित्तीय व्यवस्था मजबूत हुई है और कर्ज भी पहले की तुलना में कहीं आसानी से मिल रहा है। हालांकि सरकारी खजाने पर दबाव की समस्या बनी हुई है, लेकिन उम्मीद की जा रही है कि जैसे–जैसे आर्थिक माहौल बेहतर होगा, सरकार के लिए वित्तीय घाटा कम करने वाले कदम उठाने की गुंजाइश बढ़ेगी और हालात काबू में आते जाएंगे। जोखिम का एक बड़ा स्रोत कोरोना वायरस का संक्रमण भी रहा है। इसकी दूसरी लहर ने उठती हुई अर्थव्यवस्था को एक बार फिर पीछे धकेल दिया था।

मगर उसके बाद टीकाकरण की तेज मुहिम की बदौलत तीसरी लहर की आशंका काफी कम करने में कामयाबी मिली है। माना जा रहा है कि तीसरी लहर आई भी तो उसका स्वरूप वैसा विनाशकारी नहीं होगा, जैसा कोरोना की दूसरी लहर का था। इस विश्वास ने आर्थिक रिकवरी को रफ्तार देने में अहम भूमिका निभाई है। बहरहाल, हमें ध्यान रखना होगा कि न तो कोरोना के खतरे का पूरी तरह खात्मा हुआ है और न ही इकॉनमी पूरी तरह उबरी है। जैसे टीकाकरण की रफ्तार बनाए रखनी है, वैसे ही इकॉनमी के मोर्चे पर भी लगातार प्रयास जारी रखने होंगे। सबसे बड़ी चुनौती अब भी रोजगार के अधिक से अधिक मौके उपलब्ध कराने की है ताकि मांग बढ़े और इकॉनमी का चक्का रफ्तार पकड़े।

बूढ़ा चोर

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

सुबह होते ही राजा के सभी नौकर बड़ी जिज्ञासा के साथ कब्रिस्तान आए और जल्दी ही कब्र को खोदकर कंजूस को निकाला। मरने के बाद क्या होता है, यह हाल सुनाने के लिए कंजूस को राजा के पास चलने को कहा। कंजूस ने राजा के नौकरों की बात को थोड़ा भी नहीं सूना। किसी नगर में एक बूढ़ा चोर रहता था। सोलह वर्षीय उसका एक लड़का भी था। चोर जब ज्यादा बूढ़ा हो गया तो अपने बेटे को चोरी की विद्या सिखाने लगा। कुछ ही दिनों में वह लड़का चोरी विद्या में प्रवीण हो गया। दोनों बाप बेटा आराम से जीवन व्यतीत करने लगे। एक दिन चोर ने अपने बेटे से कहा, "देखो बेटा, साधु–संतों की बात कभी नहीं सुननी चाहिए। अगर कहीं कोई महात्मा उपदेश देता हो तो अपने कानों में उंगली डालकर वहां से भाग जाना, समझे।

संपादकीय

आधुनिक समाजवाद

प्लेनम के घोषणापत्र में मौजूद भविष्य दृष्टि पर बात करें तो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की दूसरी सदी में चीन को 'आधुनिक समाजवादी देश' बनाने का संकल्प मौजूद है। इसका व्यावहारिक अर्थ क्या है, इसे समझने में समय लगेगा। पिछले एक साल में हमने इस तरह की तीन पहलकदमियां देखी हैं जो वैसे तो पारंपरिक समाजवादी बंदिशों की ही याद दिलाती हैं लेकिन बहुसंख्यक चीनी निम्न और मध्यवर्गीय समाज में इसे सकारात्मक ढंग से लिया गया है। इसका स्वरूप कुछ ऐसा है जैसे माओ त्सेतुंग, तंग श्याओफिंग, च्यांग चेमिन और हू चिंथाओ– संक्षेप में कहें तो दस साल या इससे ज्यादा समय तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का शीर्ष नेतृत्व संभालने वाले सभी राजनेताओं को शी चिनफिंग ने अपनी चाय पार्टी में बुला रखा हो और आपस के सारे मतभेदों को एक तरफ रखकर ये इस पार्टी को एंजॉय कर रहे हों। शायद इसके जरिये चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दुनिया को यह संदेश देना चाहती है कि उसके भीतरी विवाद अब इतिहास की बात हो चुके हैं और आगे वे कभी उभरेंगे भी तो बाहरी दुनिया को उनकी भनक नहीं लगने दी जाएगी। सीपीसी की अगली कांग्रेस अगले साल होगी। इस अवधि में उसके 'आधुनिक समाजवाद' के मायने और स्पष्ट होंगे। तब तक भारत समेत पूरी दुनिया की नजर और चीजों से ज्यादा इस बात पर रहेगी कि सीमाओं पर जाहिर हो रही चीन की आक्रामकता में कुछ कमी आती है, या इसको भी कोई वैचारिक जामा पहना दिया जाता है।

सबसे बड़ी बात यह कि शी चिनफिंग को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इस सबसे बड़े नीति निर्धारक निकाय ने पार्टी के लिए रीढ़ की हड्डी जितना महत्वपूर्ण बताया है और उन्हें 'कोर लीडर' का दर्जा दिया है।

'कोर लीडर' का दर्जा

चंद्रभूषण।।

चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी अपने इतिहास के सौ साल पूरे कर चुकी है। कुछ महीने पहले शताब्दी समारोह मना लेने के बाद उसकी मौजूदा केंद्रीय समिति का छठा पूर्णाधिवेशन सत्र– प्लेनम या प्लेनरी सेशन– बीते गुरुवार, 10 नवंबर को एक घोषणापत्र जारी होने के साथ संपन्न हुआ। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने इसे अपने इतिहास की दूसरी सदी की वैचारिक तैयारी के धुरी आयोजन के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्लेनम के बाद जारी घोषणापत्र में कहा गया है कि 1921 में अपनी स्थापना के समय पार्टी ने चीन को एक स्वतंत्र, स्वाभिमानी, खुशहाल राष्ट्र बनाने का वचन दिया था, जो उसने 1949 में पूरा किया। सामंतवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों से टकराव को ध्यान में रखते हुए उस समय इसे नव–जनवादी क्रांति का नाम दिया गया था। मामूली तौर पर समृद्ध– मॉडरेटली प्रॉस्परस– राष्ट्र और उसी स्तर पर समृद्ध समाज इस संकल्प का ही एक हिस्सा था जो पूरा किया जा चुका है। अगली सदी के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) का लक्ष्य चीन को एक आधुनिक समाजवादी राष्ट्र बनाने का है, जिसके कुछ पहलुओं का खाका प्लेनम से पारित घोषणापत्र में मौजूद है।

सबसे बड़ी बात यह कि शी चिनफिंग को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इस सबसे बड़े नीति निर्धारक निकाय ने पार्टी के लिए रीढ़ की हड्डी जितना महत्वपूर्ण बताया है और उन्हें 'कोर लीडर' का दर्जा दिया है। ऐसा दर्जा जो 1945 में माओ त्सेतुंग और 1978 में तंग श्याओफिंग को दिया गया था। यह हैसियत वहां ऐसे नेताओं को ही बख्शी जाती रही है, जिनका कद उनके सरकार या पार्टी के नेतृत्व में होने या न होने पर निर्भर नहीं करता। चीनी लोक गणराज्य (पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना) की स्थापना के बाद जन्मे राजनेताओं में यह दर्जा पाने वाले शी चिनफिंग अकेले हैं। उनकी किस युगांतरकारी उपलब्धि के लिए ऐसा किया गया, यह सीपीसी सेंट्रल कमिटी के लोग ही बेहतर जानते होंगे। बाहरी दुनिया के लिए तो शी चिनफिंग के सत्ता में आने के साल 2012 में भी चीन उसी लौह नियंत्रण वाली शांति और खुशहाली के साथ आगे बढ़ रहा था, जैसे वह 1989 में थ्येनआनमन चौक पर आंदोलनकारी छात्रों के दमन के बाद से बढ़ता आ रहा था। बल्कि शी चिनफिंग के दूसरे कार्यकाल में बाकी दुनिया के साथ कई बिंदुओं पर उसका टकराव देखने को मिला और जिस आर्थिक खुलेपन और वैचारिक उदारता के लिए तंग श्याओफिंग के बाद का चीन जाना जाता रहा है, उसमें भी गिरावट दर्ज की गई। महामारी से लेकर पर्यावरण तक, और अन्य मामलों में भी चीन का इतना अलग–थलग पड़ना पांच साल पहले तक कभी नहीं देखने को मिला था।

अच्छे पहलुओं पर गौर करें तो ज्यादातर मामलों में चीन पूरी दुनिया में पहले या दूसरे नंबर पर गिना जा रहा है। सरकार घरेलू बाजार के विकास पर ज्यादा ध्यान दे रही है और विज्ञान–तकनीकी से लेकर रणनीतिक महत्व के पूंजीगत सामानों के क्षेत्र में शानदार खबरें सुनने में आ रही हैं। शीर्ष स्तर के भ्रष्टाचार के मामले भी अब वहां कम चर्चा में आते हैं। 2010–11 में जहां–तहां ऐसा पढ़ने को मिलता था कि कम्युनिस्ट नेताओं का भ्रष्टाचार जल्द ही चीन में उनकी सत्ता को ले डूबेगा। लेकिन भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम में 'मक्खी और बाघ, दोनों पर कार्रवाई' ने शी को पॉप्युलर बनाया है।

अष्टयोग-5057

7		1	6		5	4
2	34		30	4	28	
	5		3		7	1
3	30		32	6	39	
1		2		5		
	28		33	7	38	3
4		3	6		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5056 का हल

1	6	5	4	3	7	2
5	32	7	32	1	30	3
3	1	4	6	2	5	7
2	22	3	37	7	39	6
4	3	2	7	6	1	5
6	34	1	34	5	28	4
7	5	6	3	4	2	1

Jagrutidaar.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

देसी और विदेशी, दोनों तरह की पूंजी पर ताला मार दिया

मोहन। नए कर्जे लेकर दिवालिएपन से उबरने की इसकी कोशिशें कामयाब नहीं होने दी गईं। इसका हाउसिंग और ऑफिस स्पेस सस्ती दर पर चीन की दूसरी कंपनियों ने खरीद लिया। दूसरा, अरबों डॉलर की कोचिंग और ट्यूशन इंडस्ट्री में आ रही देसी और विदेशी, दोनों तरह की पूंजी पर ताला मार दिया गया। तीसरा, समृद्धि में न्यायसंगत साझेदारी के नारे के तहत कई बड़ी निजी कंपनियों की भारी रकम किसी पिछड़े इलाके या समुदाय के विकास में लगवाई गई। इससे मिलती–जुलती छिटपुट पॉप्युलिस्ट पहलकदमियां हम और देशों में भी देखते हैं लेकिन ये काम अगर चीन को एक आधुनिक समाजवादी देश बनाने के इरादे से किए गए हैं तो इनका परिप्रेक्ष्य और बेहतर तरीके से सामने आना चाहिए। इस प्लेनम की सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें काफी ज्यादा फुटेज इतिहास के इर्दगिर्द खाया गया है और विडंबना यह कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की तमाम धरतीधकेल बहसों को इसके घोषणापत्र में इस तरह कालीन के नीचे खिसका दिया गया है, जैसे नेताओं की नजरबंदी और उनके सफाये जैसा कुछ यहां कभी हुआ ही न हो।